Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

ब्रिक्स देशों के व्यापार संबंध: एक अध्ययन

डॉ. सागर एस. झंवर
सहाय्यक व्याख्याता (CHB), वाणिज्य विभाग
श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविदयालय अमरावती विदयानगर मोर्शी रोड अमरावती

Manuscript ID:
JRD -2026-180242
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 211-214
February - 2026
Submitted: 19 Jan. 2026
Revised: 29 Jan. 2026
Accepted: 14 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

सारांश

ब्रिक्स (BRICS) ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं का समूह है। इन देशों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपना महत्व बढ़ाने के लिए आपसी सहयोग और व्यापार बढ़ाने का प्रयास किया है। ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संबंध केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि राजनीतिक और रणनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। इन देशों में प्राकृतिक संसाधन, प्रौद्योगिकी, उद्योग और विशाल बाजार उपलब्ध होने के कारण आपसी व्यापार के लिए बड़ी संभावनाएँ हैं। ब्रिक्स देशों ने न्यू डेवलपमेंट बैंक, आपसी निवेश, व्यापार समझौते और आधारभूत संरचना के विकास के माध्यम से व्यापार बढ़ाने के प्रयास किए हैं। हालांकि आर्थिक असंतुलन, व्यापार असमानता, राजनीतिक मतभेद और वैश्विक आर्थिक प्रतिस्पर्धा जैसी कुछ चुनौतियाँ भी दिखाई देती हैं। इस शोध में ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संबंधों की प्रकृति, उसके आर्थिक प्रभाव और उसके सामने उपस्थित चुनौतियों का चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार सहयोग बढ़ाने की संभावनाएँ और सीमाएँ स्पष्ट होती हैं।

Keywords: *ब्रिक्स, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, आर्थिक सहयोग, उभरती अर्थव्यवस्था, वैश्विक व्यापार निवेश, आर्थिक विकास, बहुपक्षीय सहयोग, व्यापार नीति, आर्थिक भागीदारी*

प्रस्तावना

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के कारण अंतरराष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक सहयोग का महत्व काफी बढ़ गया है। इसी पृष्ठभूमि में ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं ने एक साथ आकर ब्रिक्स (BRICS) संगठन की स्थापना की। प्रारंभ में 'BRIC' शब्द का प्रयोग 2001 में अर्थशास्त्री जिम ओ'नील द्वारा किया गया था। बाद में 2010 में दक्षिण अफ्रीका के शामिल होने के बाद 'BRICS' समूह अस्तित्व में आया। ब्रिक्स देश विश्व की लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था के बड़े हिस्से में इनका योगदान है। इन देशों के पास विशाल बाजार, प्रचुर प्राकृतिक संसाधन, उत्पादन क्षमता और तकनीकी विकास की क्षमता उपलब्ध है। इसलिए वैश्विक व्यापार व्यवस्था में इन देशों का महत्व लगातार बढ़ रहा है। ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संबंध वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में संतुलन स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन देशों ने आपसी व्यापार बढ़ाने, निवेश को प्रोत्साहित करने और विकास परियोजनाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए विभिन्न पहल की हैं। विशेष रूप से न्यू डेवलपमेंट बैंक और ब्रिक्स बिजनेस काउंसिल के माध्यम से व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. सागर एस. झंवर, सहाय्यक व्याख्याता (CHB), वाणिज्य विभाग श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविदयालय अमरावती विदयानगर मोर्शी रोड अमरावती

How to cite this article:
झंवर, . सागर . एस . (2026). ब्रिक्स देशों के व्यापार संबंध: एक अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 211–214. https://doi.org/10.5281/zenodo.18937617

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18937617
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

हालाँकि ब्रिक्स देशों के बीच आर्थिक असमानता, राजनीतिक मतभेद, व्यापार असंतुलन और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा जैसी कुछ चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। इसलिए ब्रिक्स देशों के व्यापार संबंधों की प्रकृति, उसके प्रभाव और उसमें मौजूद अवसरों व चुनौतियों का अध्ययन करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में इन सभी पहलुओं का चिकित्सात्मक विश्लेषण किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संबंधों की प्रकृति का अध्ययन करना।
2. ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार सहयोग के आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. ब्रिक्स व्यापार संबंधों के सामने उपस्थित चुनौतियों और अवसरों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में द्वितीयक जानकारी पद्धति का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन के लिए विभिन्न पुस्तकें, शोध लेख, सरकारी रिपोर्ट, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्ट और वेबसाइटों पर उपलब्ध जानकारी का उपयोग किया गया है। संकलित जानकारी का विश्लेषण करके ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संबंधों की प्रकृति को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य विषय विश्लेषण

1) ब्रिक्स संगठन की संकल्पना और निर्माण

ब्रिक्स (BRICS) विश्व की उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं का एक महत्वपूर्ण समूह है, जिसमें ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं। इस संगठन की संकल्पना सबसे पहले वर्ष 2001 में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जिम ओ'नील द्वारा प्रस्तुत की गई थी। उन्होंने "BRIC" शब्द का प्रयोग उन देशों के लिए किया था जिनकी अर्थव्यवस्था तेज़ी से विकसित हो रही थी और जो भविष्य में वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे। प्रारंभ में इस समूह में ब्राज़ील, रूस, भारत और चीन शामिल थे। वर्ष 2006 में इन चार देशों के विदेश मंत्रियों की पहली बैठक आयोजित की गई, जिसमें आपसी आर्थिक सहयोग को बढ़ाने पर चर्चा हुई। इसके बाद वर्ष 2009 में रूस के येकातेरिनबर्ग शहर में पहली ब्रिक शिखर सम्मेलन आयोजित की गई। इस सम्मेलन में सदस्य देशों ने वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में सुधार, आपसी व्यापार वृद्धि और बहुपक्षीय सहयोग को मजबूत करने पर जोर दिया। बाद में वर्ष 2010 में दक्षिण अफ्रीका को इस समूह में शामिल किया गया, जिसके बाद इस संगठन का नाम "BRICS" हो गया। दक्षिण अफ्रीका के शामिल होने से इस संगठन का प्रतिनिधित्व एशिया, यूरोप, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका जैसे प्रमुख क्षेत्रों तक विस्तारित हो गया।

ब्रिक्स संगठन का मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ाना, वैश्विक आर्थिक संस्थाओं में सुधार लाना और विकासशील देशों के हितों की रक्षा करना है। इसके अंतर्गत न्यू डेवलपमेंट बैंक और ब्रिक्स बिजनेस काउंसिल जैसी संस्थाओं की स्थापना भी की गई है, जिनका उद्देश्य विकास परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करना और व्यापार सहयोग को प्रोत्साहित करना है।

2) ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार का स्वरूप

ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार का स्वरूप विविध और बहुआयामी है। ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों की आर्थिक संरचना अलग-अलग होने के कारण इनके बीच वस्तुओं, सेवाओं, ऊर्जा और तकनीक का व्यापक आदान-प्रदान होता है। इन देशों की अर्थव्यवस्थाएँ एक-दूसरे के लिए पूरक मानी जाती हैं, जिसके कारण व्यापारिक संबंधों में निरंतर वृद्धि देखी गई है। चीन ब्रिक्स देशों में विनिर्माण क्षेत्र में अग्रणी है और वह बड़ी मात्रा में औद्योगिक वस्तुएँ, मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और उपभोक्ता वस्तुएँ निर्यात करता है। भारत सेवा क्षेत्र, औषधि उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी तथा कृषि उत्पादों के निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रूस ऊर्जा संसाधनों, विशेष रूप से तेल और प्राकृतिक गैस के निर्यात के लिए जाना जाता है, जबकि ब्राज़ील कृषि उत्पादों, खनिज संसाधनों और खाद्य पदार्थों का प्रमुख निर्यातक है। दक्षिण अफ्रीका खनिज संसाधनों, धातुओं और औद्योगिक कच्चे माल के व्यापार में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार में ऊर्जा, औद्योगिक वस्तुएँ, कृषि उत्पाद, खनिज संसाधन, प्रौद्योगिकी और सेवाएँ जैसे प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं। इसके अलावा इन देशों के बीच आपसी निवेश, तकनीकी सहयोग और पायाभूत संरचना विकास से संबंधित परियोजनाओं में भी वृद्धि हुई है। हाल के वर्षों में ब्रिक्स देशों ने आपसी व्यापार को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए स्थानीय मुद्राओं में व्यापार, व्यापार

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

सुगमता और निवेश सहयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किए हैं। इस प्रकार ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार का स्वरूप परस्पर सहयोग, संसाधनों के आदान-प्रदान और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने वाला है।

3) ब्रिक्स व्यापार सहयोग का महत्व

ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार सहयोग का वैश्विक अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे उभरते हुए देशों ने आपसी व्यापार और आर्थिक सहयोग के माध्यम से अपने आर्थिक विकास को गति देने का प्रयास किया है। इन देशों के पास विशाल जनसंख्या, बड़ी बाजार व्यवस्था, प्रचुर प्राकृतिक संसाधन और उत्पादन क्षमता उपलब्ध है, जिससे व्यापार सहयोग की संभावनाएँ और अधिक बढ़ जाती हैं। ब्रिक्स व्यापार सहयोग का पहला महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इससे वैश्विक व्यापार में विकासशील देशों की भूमिका मजबूत हुई है। पहले वैश्विक व्यापार में विकसित देशों का वर्चस्व अधिक था, लेकिन ब्रिक्स देशों के बढ़ते व्यापार ने इस संतुलन को बदलने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा आपसी व्यापार से सदस्य देशों को नए बाजार प्राप्त होते हैं, जिससे उनके उद्योगों और उत्पादन क्षेत्र को विस्तार का अवसर मिलता है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि ब्रिक्स देशों के बीच निवेश और तकनीकी सहयोग में वृद्धि हुई है। न्यू डेवलपमेंट बैंक जैसे संस्थानों के माध्यम से पायाभूत संरचना, ऊर्जा और विकास परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इससे सदस्य देशों के आर्थिक विकास को मजबूती मिलती है। तीसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार सहयोग से वैश्विक आर्थिक प्रणाली में बहुपक्षीयता को बढ़ावा मिलता है। इससे विकासशील देशों को अपनी आर्थिक नीतियों और हितों की रक्षा करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार ब्रिक्स व्यापार सहयोग आर्थिक विकास, वैश्विक व्यापार संतुलन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4) ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार में असंतुलन

ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार में लगातार वृद्धि हुई है, फिर भी इन देशों के बीच व्यापारिक असंतुलन एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में सामने आता है। ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका की आर्थिक संरचना, उत्पादन क्षमता और निर्यात-आयात के स्वरूप में भिन्नता होने के कारण व्यापार संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। विशेष रूप से चीन की अर्थव्यवस्था अन्य ब्रिक्स देशों की तुलना में अधिक मजबूत और व्यापक होने के कारण व्यापार में असंतुलन दिखाई देता है। चीन ब्रिक्स देशों में सबसे बड़ा निर्यातक देश है। वह बड़ी मात्रा में औद्योगिक वस्तुएँ, मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और उपभोक्ता वस्तुओं का निर्यात करता है। इसके विपरीत अन्य ब्रिक्स देशों की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कच्चे माल, ऊर्जा संसाधनों और कृषि उत्पादों के निर्यात पर अधिक निर्भर है। इस कारण व्यापार का संतुलन अक्सर चीन के पक्ष में झुका हुआ दिखाई देता है।

भारत और चीन के बीच व्यापार असंतुलन इसका प्रमुख उदाहरण है। भारत चीन से बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ, मशीनरी और औद्योगिक उत्पाद आयात करता है, जबकि चीन को भारत की निर्यात मात्रा अपेक्षाकृत कम है। इसी प्रकार कुछ अन्य ब्रिक्स देशों के बीच भी आयात-निर्यात में असमानता देखी जाती है। यह व्यापार असंतुलन दीर्घकाल में आर्थिक निर्भरता और व्यापारिक चुनौतियों को जन्म दे सकता है। इसलिए ब्रिक्स देशों के लिए यह आवश्यक है कि वे व्यापार संतुलन बनाए रखने के लिए निर्यात में विविधता लाएँ, तकनीकी विकास को प्रोत्साहित करें और आपसी आर्थिक सहयोग को अधिक संतुलित बनाने का प्रयास करें।

5) ब्रिक्स व्यापार संबंधों के सामने चुनौतियाँ

ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संबंधों में निरंतर वृद्धि हुई है, लेकिन इसके साथ कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों की आर्थिक संरचना, राजनीतिक हित और विकास स्तर अलग-अलग होने के कारण आपसी व्यापार सहयोग को मजबूत बनाए रखना हमेशा आसान नहीं होता। सबसे प्रमुख चुनौती राजनीतिक मतभेदों की है। कुछ सदस्य देशों के बीच राजनीतिक और रणनीतिक मतभेद व्यापार संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भारत और चीन के बीच सीमा विवाद के कारण कभी-कभी आर्थिक और व्यापारिक संबंधों पर भी प्रभाव पड़ता है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती आर्थिक असमानता है। ब्रिक्स देशों में चीन की अर्थव्यवस्था अन्य देशों की तुलना में काफी बड़ी और शक्तिशाली है। इससे व्यापार में असंतुलन पैदा होता है और अन्य देशों को प्रतिस्पर्धा में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

तीसरी चुनौती व्यापारिक बाधाओं और संरक्षणवादी नीतियों की है। कई बार देश अपने घरेलू उद्योगों की सुरक्षा के लिए आयात पर प्रतिबंध या शुल्क बढ़ा देते हैं, जिससे आपसी व्यापार में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

इसके अतिरिक्त वैश्विक आर्थिक मंदी, अंतरराष्ट्रीय बाजार में उतार-चढ़ाव और मुद्रा विनिमय दरों में अस्थिरता भी ब्रिक्स देशों के व्यापार संबंधों को प्रभावित करती है। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान निकालने के लिए सदस्य देशों के बीच सहयोग, संवाद और समन्वय को मजबूत बनाना आवश्यक है, ताकि ब्रिक्स देशों के व्यापार संबंध अधिक स्थिर और मजबूत बन सकें।

6) ब्रिक्स व्यापार संबंधों में अवसर

ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संबंधों में भविष्य के लिए अनेक महत्वपूर्ण अवसर मौजूद हैं। ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों के पास विशाल जनसंख्या, विस्तृत बाजार, प्राकृतिक संसाधन और तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था है। इन विशेषताओं के कारण आपसी व्यापार और आर्थिक सहयोग को और अधिक विस्तार देने की बड़ी संभावनाएँ दिखाई देती हैं। सबसे महत्वपूर्ण अवसर यह है कि ब्रिक्स देश आपसी व्यापार को बढ़ाकर वैश्विक बाजार में अपनी स्थिति को मजबूत बना सकते हैं। यदि ये देश आपसी सहयोग को बढ़ाते हैं, तो वे विकसित देशों के आर्थिक वर्चस्व को संतुलित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके अलावा सदस्य देशों के बीच तकनीकी सहयोग, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में भी व्यापक संभावनाएँ हैं।

डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, पायाभूत संरचना विकास और औद्योगिक उत्पादन जैसे क्षेत्रों में ब्रिक्स देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के कई अवसर उपलब्ध हैं। न्यू डेवलपमेंट बैंक जैसे संस्थानों के माध्यम से सदस्य देशों में विकास परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे आर्थिक विकास को गति मिलती है। इसके अतिरिक्त ब्रिक्स देश स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार में डॉलर पर निर्भरता कम हो सकती है। इस प्रकार आपसी सहयोग, निवेश और व्यापार विस्तार के माध्यम से ब्रिक्स देशों के बीच आर्थिक संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने के अनेक अवसर मौजूद हैं।

निष्कर्ष

ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संबंध वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों ने आपसी सहयोग के माध्यम से आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। इन देशों के पास विशाल बाजार, प्रचुर प्राकृतिक संसाधन और उत्पादन क्षमता उपलब्ध होने के कारण व्यापार सहयोग की बड़ी संभावनाएँ हैं। ब्रिक्स देशों ने न्यू डेवलपमेंट बैंक, व्यापार समझौते और आर्थिक सहयोग के माध्यम से व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अनेक पहल की हैं। इन पहलों के परिणामस्वरूप आधारभूत संरचना विकास, निवेश और व्यापार में वृद्धि हुई है।

हालाँकि ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार असंतुलन, राजनीतिक मतभेद और आर्थिक प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। विशेष रूप से चीन का आर्थिक प्रभुत्व और कुछ देशों के बीच व्यापार असंतुलन एक महत्वपूर्ण समस्या है। इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए ब्रिक्स देशों को आपसी विश्वास, सहयोग और समन्वय को और अधिक मजबूत करना आवश्यक है। व्यापार सुगमता, निवेश वृद्धि और प्रौद्योगिकी सहयोग के माध्यम से ब्रिक्स देशों के आर्थिक संबंधों को और मजबूत बनाया जा सकता है। इस प्रकार ब्रिक्स देशों के व्यापार संबंध भविष्य में वैश्विक अर्थव्यवस्था के संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. दत्त, आर. और सुंदरम, के., भारतीय अर्थशास्त्र
2. मिश्रा, एस., अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र
3. कुलकर्णी, एस., वैश्विक अर्थव्यवस्था
4. जोशी, वी., अंतरराष्ट्रीय व्यापार सिद्धांत
5. पाटिल, बी., वैश्वीकरण और भारत
6. देशपांडे, एम., आधुनिक अर्थशास्त्र
7. आर्थिक सर्वेक्षण, भारत सरकार
8. भारतीय रिजर्व बैंक, वार्षिक रिपोर्ट
9. ब्रिक्स शिखर सम्मेलन रिपोर्ट
10. संयुक्त राष्ट्र व्यापार रिपोर्ट